

“मीठे बच्चे - यह रुद्र ज्ञान यज्ञ स्वयं रुद्र भगवान ने रचा है, इसमें तुम अपना सब कुछ स्वाहा करो क्योंकि अब घर चल-

प्रश्न:- संगमयुग पर कौन-सा वण्डरफुल खेल चलता है?

उत्तर:- भगवान के रचे हुए यज्ञ में ही असुरों के विघ्न पड़ते हैं। यह भी संगम पर ही वण्डरफुल खेल चलता है। ऐसा यज्ञ फिर सारे कल्प में नहीं रचा जाता। यह है राजस्व पड़ते हैं।

ओम् शान्ति। तुम कहाँ बैठे हो? इनको स्कूल अथवा युनिवर्सिटी भी कह सकते हो। विश्व विद्यालय है, जिसकी ईश्वरीय ब्रान्चेज हैं। बाप ने बड़े ते बड़ी युनिवर्सिटी खोल तुम बच्चे जानते हो शिवबाबा ने यह पाठशाला अथवा युनिवर्सिटी खोली है। ऊंच ते ऊंच बाप पढ़ाते हैं। यह तो बच्चों की बुद्धि में याद रहना चाहिए - भगवान हमको पढ़ाते हैं। राजस्व अश्वमेध रुद्र ज्ञान यज्ञ, राजस्व अर्थात् स्वराज्य के लिए। अश्वमेध, यह जो कुछ भी देखने में आता है, उन सबको स्वाहा कर रहे हैं, शरीर भी स्वाहा हो जाता हो जायेंगे। बाकी आत्मायें वापिस भागेंगी। यह है संगमयुग। बहुत आत्मायें भागेंगी, बाकी शरीर खत्म हो जायेंगे। यह है सब ड्रामा, तुम ड्रामा के वश चल रहे हो। बाप अनुसार रचा गया है। ऐसे नहीं कहेंगे कि मैंने यज्ञ रचा है। ड्रामा प्लेन अनुसार तुम बच्चों को पढ़ाने के लिए कल्प पहले मुआफिक ज्ञान यज्ञ रचा गया है। मैंने रचा है, यह भ कल्प-कल्प रचा जाता है। यह ड्रामा बना हुआ है ना। ड्रामा प्लेन अनुसार एक ही बार यज्ञ रचा जाता है, यह कोई नई बात नहीं है। अभी बुद्धि में बैठा है - बरोबर 5 हजार है। फिर से नई दुनिया स्थापन हो रही है। तुम नई दुनिया में स्वराज्य पाने के लिए पढ़ रहे हो। पवित्र भी जरूर बनना है। बनते भी वही हैं जो ड्रामा अनुसार कल्प पहले बने और फिर पुरुषार्थ भी करना होता है। बच्चों को मार्ग भी बताना है, मुख्य बात है पवित्रता की। बाप को बुलाते ही हैं कि आओ पवित्र बनाकर हमको इस छी-छी दुनिया से को प्वाइंट्स तो बहुत दी जाती हैं। मुख्य बात फिर भी बाप कहते हैं मनमनाभव। पावन बनने के लिए बाप को याद करते हैं, यह भूलना नहीं चाहिए। जितना याद करेंगे पिछाड़ी में फेल हो जायेंगे। बच्चे समझते हैं, हम ही सतोप्रधान थे, नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार जो ऊंच बनते हैं, उनको मेहनत भी जास्ती करनी पड़ेगी। याद में रहना पड़ेगा। दिन आने हैं। बरोबर हमारे अथाह सुख के दिन आने हैं। बाप एक ही बार आते हैं, दुःखधाम खलास कर अपने सुखधाम ले चलते हैं। तुम बच्चे जानते हो अभी हम ईश्वरीय का ही गायन है - यह संगम ही पुरुषोत्तम ऊंच बनने का युग है। तुम बच्चे जानते हो हमको बेहद का बाप पढ़ा रहे हैं। फिर आगे चल संन्यासी लोग भी मानेंगे। वह भी स सकता। अभी राजधानी स्थापन हो रही है, टाइम पड़ा है। पिछाड़ी में यह संन्यासी आदि भी आकर समझेंगे। सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है, यह नॉलेज कोई में है नहीं। या अबलाओं पर अत्याचार होते हैं। द्रोपदी ने पुकारा है ना। वास्तव में तुम सब द्रोपदियाँ, सीतायें, पार्वतियाँ हो। याद में रहने से अबलायें, कुब्जायें भी बाप से वर्सा पा लेती रचा है, इसमें कितने विघ्न पड़ते हैं। अभी भी विघ्न पड़ते रहते हैं, कन्याओं को जबरदस्ती शादी कराते हैं, नहीं तो मारकर निकाल देते हैं इसलिए पुकारती हैं हे पतित-पा पावन बनाये। गंगा के पानी से पावन नहीं बनेंगे। बाप ही आकर पावन बनाए पावन दुनिया का मालिक बनाते हैं।

तुम देखते हो इस पतित दुनिया का विनाश सामने खड़ा है। क्यों न बाबा का बन जायें, स्वाहा हो जायें। पूछते हैं स्वाहा कैसे हों? ट्रांसफर कैसे करें? बाबा कहते - बच्चे, तु सिखा रहे हैं। जैसा कर्म हम करेंगे हमको देख और करेंगे। बाप ने इनसे कर्म कराया ना। सारा यज्ञ में स्वाहा कर दिया। स्वाहा होने में कोई तकलीफ थोड़ेही है। यह न बहुत है तो उसमें खानपान की सब सामग्री चाहिए ना। यह है ईश्वरीय यज्ञ। ईश्वर ने आकर इस ज्ञान यज्ञ की स्थापना की है। तुमको पढ़ाते हैं, इस यज्ञ की महिमा बहुत भारी जो अपने को अर्पणमय समझते हैं, हम ट्रस्टी हैं। यह सब कुछ ईश्वर का है, हम शिवबाबा के यज्ञ से भोजन खाते हैं - यह समझ की बात है ना। यहाँ तो नहीं सबको आ स्वाहा किया। बाबा कहते हैं जैसे कर्म यह करता है, इनको देख औरों को भी आया। बहुत ही स्वाहा हुए। जो-जो हुए वह अपना वर्सा लेते हैं। बुद्धि से भी समझा जाता ; जायेंगे। यह बेहद का यज्ञ है, इनमें सब स्वाहा होंगे। तुम बच्चों को समझाया जाता है कैसे बुद्धि से स्वाहा हो नष्टोमोहा बन जाओ। यह भी जानते हो यह सारी सामग्री खाव नहीं रचा जाता है। न कोई उपद्रव होते हैं। यह सब जो भक्ति मार्ग के अनेक यज्ञ हैं वह सब खत्म हो जाते हैं। ज्ञान सागर एक ही भगवान है। वही मनुष्य सृष्टि का बीजरूप वह ज्ञान सागर है, तुम बच्चों को ज्ञान सागर बैठ पढ़ाते हैं। वह सिर्फ गाते रहते हैं और तुमको बाबा सारा ज्ञान सुना रहे हैं। ज्ञान कोई बहुत तो है नहीं। वर्ल्ड का चक्र कैसे पि

यहाँ बाप तुमको खुद पढ़ा रहे हैं। कहते भी हैं साधारण तन में प्रवेश करता हूँ। भागीरथ भी मशहूर है, जरूर मनुष्य ही होगा जिसमें बाप आयेगा। उनका एक ही नाम चल नहीं बदलता। बाकी भक्ति में अनेक नाम रख दिये हैं। यहाँ तो है ही शिवबाबा। शिव कल्याणकारी कहा जाता है। भगवान ही आकर नई दुनिया स्वर्ग स्थापन करते हैं। तं था। अभी नर्क है फिर स्वर्ग जरूर होगा। इनको कहा जाता है पुरुषोत्तम संगमयुग जबकि बाप खिचैया बन तुमको इस पार से उस पार ले जाते हैं। यह है पुरानी दुःख व जिसके लिए तुम अभी पुरुषार्थ करते हो। बाप की याद ही घड़ी-घड़ी भूल जाती है, इसमें है मेहनत बाकी तुमसे जो विकर्म हुए हैं, उनकी सजा कर्मभोग के रूप में भोगनी ही नहीं मिल सकती है। ऐसे नहीं, बाबा क्षमा करो। कुछ भी नहीं। ड्रामा अनुसार सब होता है। क्षमा आदि होती ही नहीं। हिसाब-किताब चुकू करना ही है। तमोप्रधान से स श्री शिव-बाबा की श्रीमत से तुम श्री बनते हो। ऊंच ते ऊंच बाप तुमको ऊंच बनाते हैं। तुम अभी बन रहे हो, अभी तुमको स्मृति आई है - बाबा कल्प-कल्प आकर हमको चक्र कैसे फिरता है, उस नॉलेज की दरकार नहीं रहती। कल्प-कल्प एक ही बार आकर बतलाते हैं कि यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है।

तुम्हारा काम है पढ़ना और पवित्र बनना। योग में रहना है। बाप के बनकर और पवित्र नहीं बनेंगे तो सौ गुणा दण्ड पड़ जायेगा। नाम भी बदनाम हो जाता है। गाते भी हैं स यह कौन है। सत बाप ही सतगुरु, सत टीचर होगा ना। तुमको पढ़ाते वह हैं, सच्चा सतगुरु भी है। जैसे बाप ज्ञान का सागर है, तुम भी ज्ञान के सागर हो ना। बाप ने तो स किया है, उतना ही करेंगे। पुरुषार्थ करना है, कर्म बिगर तो कोई रह न सके। कितने भी हठयोग आदि करते हैं, वह भी कर्म है ना। यह भी एक धन्धा है, आजीविका के लिए। चले जाते हैं। सिर्फ उड़ नहीं सकते हैं। उसमें तो पेट्रोल आदि चाहिए ना। लेकिन इनसे फायदा तो कुछ नहीं। पावन तो बनते नहीं। साइंस वालों की भी रेस है। उनकी है स ही मांगते हैं। बाप कहते हैं शान्ति तो तुम्हारा स्वधर्म है, अपने को आत्मा समझो, अपने घर चलना है शान्तिधाम। यह है दुःखधाम। हम शान्तिधाम से फिर सुखधाम में अ धारण कर फिर औरों को धारण कराना है। बाकी थोड़े रोज हैं, वह पढ़ाई पढ़कर फिर शरीर निर्वाह अर्थ माथा मारना पड़ता है। तकदीरवान बच्चे फौरन निर्णय ले लेते ; मिलता है और इस पढ़ाई से क्या मिलता है। इस पढ़ाई से तो 21 जन्मों की प्रालम्ब बनती है। तो ख्याल करना चाहिए कि हमको कौन-सी पढ़ाई पढ़नी है। जिसको बेहद वे हैं। परन्तु ड्रामा प्लेन अनुसार कोई की तकदीर में नहीं है तो फिर उस पढ़ाई में चटक पड़ते हैं। यह पढ़ाई नहीं पढ़ते। कहते फुरसत नहीं मिलती। बाबा पूछते हैं, कौन-सी नॉले कहते हैं बाबा जिस्मानी पढ़ाई से क्या मिलेगा, थोड़ा करके कमायेंगे। यहाँ तो भगवान पढ़ाते हैं। हमको तो पढ़कर राजाई पद पाना है तो ज्यादा ध्यान किस बात पर देना फिर आयेंगे। बाबा समझ जाते हैं इनकी तकदीर में नहीं है। क्या होना है सो आगे चल देखना है। समझते हैं शरीर पर भरोसा नहीं है, तो फिर सच्ची कमाई में लग जा जगायेंगे। पूरा जोर लगाना है, हम तो बाप से वर्सा लेकर ही छोड़ेंगे। बेहद का बाबा हमको राजाई देते हैं तो क्यों न यह एक अन्तिम जन्म हम पवित्र बनेंगे। इतने ढेर बच्चे प रहे हैं। पढ़ रहे हैं, फिर भी विश्वास नहीं करते। बेहद का बाप आते ही तब हैं जब पुरानी दुनिया को नया बनाना होता है। पुरानी दुनिया का विनाश तो सामने खड़ा है। यह ब हैं, सतयुग में होता ही एक धर्म है। यह भी तुम्हारी बुद्धि में है। तुम्हारे में भी कोई हैं जो निश्चय अजुन कर रहे हैं। अरे निश्चय करने में टाइम लगता है क्या। शरीर पर भ किसकी तकदीर में नहीं है तो ज़रा भी बुद्धि में आता नहीं है। अच्छा।

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रुहानी बाप की रुहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

- 1) सच्ची कमाई कर 21 जन्मों के लिए अपनी तकदीर बनानी है। शरीर पर कोई भरोसा नहीं है इसलिए ज़रा भी चांस नहीं गँवाना है।
- 2) नष्टोमोहा बनकर अपना सब कुछ रुद्र यज्ञ में स्वाहा करना है। अपने को अर्पण कर ट्रस्टी हो सम्मालना है। साकार बाप को फालो करना है।

वरदान:- ईश्वरीय नशे द्वारा पुरानी दुनिया को भूलने वाले सर्व प्राप्ति सम्मन्न भव

जैसे वह नशा सब कुछ भुला देता है, ऐसे यह ईश्वरीय नशा दुखों की दुनिया को सहज ही भुला देता है। उस नशे में तो बहुत नुकसान होता है, अधिक पीने से ख

जो सदा ईश्वरीय नशे में मस्त रहते हैं वह सर्व प्राप्ति सम्पन्न बन जाते हैं। एक बाप दूसरा न कोई - यह स्मृति ही नशा चढ़ाती है। इसी स्मृति से समर्थो आ जाती
स्लोगन:- एक दो को कॉपी करने के बजाए बाप को कॉपी करो।

अव्यक्त इशारे-आत्मिक स्थिति में रहने का अभ्यास करो, अन्तर्मुखी बनो

अन्तर्मुखी रहने वाले ही हर ज्ञान-रत्न की गुह्यता में जा सकते हैं। ज्ञान की हर प्वाइंट का राज क्या है और किस समय, किस विधि से उसे कार्य में वा सेवा में लगाना है, इ जाओ, तो नशे की अनुभूति कर सकेंगे।
